व्हाइट हाउस

प्रेस सेक्रेटरी कार्यालय

तत्काल जारी करने हेतु 25 सितंबर, 2012

संयुक्त राष्ट्र की आम सभा में राष्ट्रपति का वक्तव्य

संयुक्त राष्ट्र मुख्यालय

न्यूयॉर्क, न्यूयॉर्क

10:22 प्रातः ईडीटी

राष्ट्रपतिः श्रीमान् अध्ययक्ष महोदय, श्रीमान् महासचिव, साथी प्रतिनिधिगण, देवियो और सज्जनोः आज मैं आपको एक अमेरिकी क्रिस स्टीवेंस के बारे में बताकर आरंभ करना चाहता हंू।

क्रिस का जन्म कैलिफोर्निया के ग्रास वैली नामक कस्बे में हुआ था, वे एक वकील और संगीतकार के पुत्र थे। युवावस्था में क्रिस पीस क्रॉप्स में शामिल हुए और मोरक्को में अंग्रेजी अध्यापन कार्य किया। उनके हृदय में उत्तरी अफ्रीका व मध्य पूर्व के लोगों के प्रति बहुत प्यार और सम्मान था। उन्होंने इस प्रतिबद्धता का जीवनपर्यंत पालन किया। एक राजनयिक के रूप में उन्होंने मिस्र से लेकर सीरिया, सऊदी अरब से लेकर लीबिया तक में कार्य किया। जिन शहरों में उन्होंने कार्य किया वहां उन्हें सड़कों पर घूमने वाले के रूप में जाना जाता था जहां वह - स्थनीय खाने का स्वाद लेते, अधिक से अधिक लोगों से मिलते, अरबी में बोलते, बड़ी मुस्कान के साथ लोगों को सुनते थे।

क्रिस लीबियाई क्रांति के आरंभ के दिनों में कार्गो जहाज पर बेनगाज़ी गए थे। अमेरिका के प्रतिनिधि के रूप में उन्होंने लीबियाई लोगों की हिंसक संघर्ष के समय मदद की, घायलों की देखभाल की, और ऐसे भविष्य के दृष्टिकोण की रचना की, जिसमें सभी लीबियाई लोगों के

अधिकारों का सम्मान हो। क्रांति के बाद उन्होंने नए लोकतंत्र के जन्म का समर्थन किया जैसे कि लीबियाई लोगों ने चुनाव कराए और नए संस्थान बनाए, और दशकों की तानाशाही से निकलकर आगे बढ़ना शुरू किया।

क्रिस स्टीवेंस अपने कार्य से प्यार करते थे। उन्हें जिस देश में सेवा का गौरव प्राप्त हुआ और जिन लोगों से मिले उनमें सम्मान देखा। वे दो सप्ताह पूर्व नया सांस्कृतिक सेंटर स्थापित करने और एक अस्पताल के आधुनिकीकरण की योजनाओं का पुनरीक्षण करने हेतु बेनगाज़ी गए थे। उसी समय अमेरिकी परिसर पर हमला हुआ। अपने तीन साथियों के साथ उस शहर में क्रिस को मार दिया गया जिसको बचाने में उन्होंने मदद की थी। वे 52 वर्ष के थे।

मैंने यह कहानी इसलिए सुनाई क्योंकि क्रिस स्टीवेंस अमेरिका के सबसे अच्छे लोगों में थे। अपने साथी विदेश सेवा अधिकारियों की तरह उन्होंने महासागरों के पार सांस्कृतियों के बीच पुलों का निर्माण किया। उनका अंतर्राष्ट्रीय सहयोग में गहरा लगाव था जिसका प्रतिनिधित्व संयुक्त राष्ट्र करता है। उन्होंने विनम्रता के साथ कार्य किया, लेकिन अपने सिद्धांतों पर अडिग रहे -- उनका मानना था कि व्यक्तियों को अपना भाग्य, स्वतंत्रतापूर्ण जीवन, सम्मान, न्याय और अवसर सुनिश्चित करने हेतु स्वतंत्र होना चाहिए।

बेनगाज़ी के नागरिकों पर हुए हमले अमेरिका पर हमले थे। हम लीबिया सरकार और लीबियाई लोगों द्वारा मदद करने के आभारी हैं। इसमें कोई संदेह नहीं होना चाहिए कि हम हत्यारों का पता लगाने और उन्हें न्याय के कटघरे में लाने के लिए कठोर प्रयास करेंगे। हाल के दिनों इस क्षेत्र के मिस्र, ट्यूनीशिया व यमन सहित अन्य देशों के नेताओं द्वारा हमारे राजनयिक कार्यालयों की सुरक्षा और शांति के लिए उठाए गए कदमों एवं पूरी दुनिया में धार्मिक अधिकारियों की भी हम सराहना करते हैं।

हम समझते हैं कि गत दो सप्ताह के अंतर्गत हुए हमले मात्र अमेरिका पर साधारण हमले नहीं थे। वे उन आदर्शों पर हमले थे जिन पर संयुक्त राष्ट्र की आधार शिला रखी गई है -- जिसकी भावना है कि लोग अपने मतभेदों का हल शांतिपूर्वक ढूंढ सकते हैं; कि युद्ध का स्थान कूटनीति ले सकती है; कि एक अन्योन्याश्रित दुनिया में हमारे नागरिकों के लिए अच्छे रोजगार के अवसरों और सुरक्षा हेतु कार्य करना हम सभी का उत्तरदायित्व है।

यदि हम इन आदर्शों को कायम रखने हेतु गंभीर हैं, तो दूतावास के मुख्य द्वार पर और अधिक सुरक्षा गार्ड रखना पर्याप्त नहीं होगा, या खेद के वक्तव्य जारी करना और आक्रोश के गुजर जाने का इंतजार करना काफी नहीं है। यदि हम इन आदर्शों के बारे में गंभीर हैं तो हमें संकट के प्रमुख कारणों के बारे में ईमानदारी से बात करनी होगी। क्योंकि हमें अलग-थलग करने वाली ताकतों और आम आदमी की आशाओं के बीच एक को चुनना होगा।

आज हमें पुनर्पुष्टि करनी होगी कि हमारा भविष्य क्रिस स्टीवेंस जैसे लोग सुनिश्चित करेंगे -- न कि उनके हत्यारे। आज, हमें घोषणा करनी होगी कि हिंसा और असहिष्णुता के लिए हमारे संयुक्त राष्ट्र में कोई स्थान नहीं है।

दो साल से भी कम समय हुआ है जब ट्यूनीशिया में एक विक्रेता ने अपने देश में दमनकारी भ्रष्टाचार के विरोध में अपने आपको आग लगा ली थी, और एक उत्तेजना पैदा की जिसे अरब स्प्रिंग के रूप में जाना जाता है। उस समय से दुनिया बदलाव के रास्ते पर चल पड़ी, और अमेरिका ने परिवर्तन की इन शक्तियों का समर्थन किया।

हम ट्यूनीशियाई विरोध से प्रेरित थे जिसने एक तानाशाह को विदा कर दिया था, क्योंकि हम सड़कों पर उतर आए पुरुषों व महिलाओं की आकांक्षाओं में विश्वास करते हैं।

हमने मिस्र में परिवर्तन पर जोर दिया, क्योंकि लोकतंत्र को हमारे समर्थन ने हमें अंततः लोगों के पक्ष में खड़ा कर दिया।

हमने यमन में नेतृत्व परिवर्तन का समर्थन किया क्योंकि वर्तमान भ्रष्ट स्थिति लोगों के हितों का ध्यान नहीं रख रही थी।

हमने लीबिया में बड़े गठबंधन तथा संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के आदेश के साथ हस्तक्षेप किया। क्योंकि हममें निर्दोष लोगों के संहार को रोकने की क्षमता थी, और इसलिए कि मेरा विश्वास था कि एक तानाशाह से अधिक शक्तिशाली लोगों की अभिलाषाएं हैं।

जैसे कि हम यहां मिले हैं, हम फिर से घोषणा करते हैं कि बशर अल-असद के शासन का अंत होना ही चाहिए, ताकि सीरियाई लोगों के दुःखों का अंत हो सके और एक नई सुबह का आरंभ हो सके।

हमने यह जिम्मेदारी ली हैं क्योंकि हमारा विश्वास है कि एक संस्कृति के लिए आत्मनिर्णय और स्वतंत्रता कोई अनोखी बात नहीं है। यह अमेरिका या पश्चिम के साधारण मूल्य नहीं हैं -- यह वैश्विक मूल्य हैं। लोकतंत्र में परिवर्तित होने की बड़ी चुनौतियां भी होंगी, मुझे विश्वास है कि अंततः जनता की सरकार, जनता के द्वारा और जनता के लिए बनेगी और स्थायित्व, समृद्धि, और वैयक्तिक अवसर दुनिया की शांति का आधार बनेंगे।

इसलिए आइए याद करें कि यह प्रगति का दौर है। दशकों से पहली बार ट्यूनीशियाई, मिस्रवासियों और लीबियाइयों ने चुनावों में विश्वसनीय, प्रतियोगी और निष्पक्ष नए नेताओं के लिए मतदान किया। अरब दुनिया में यह लोकतांत्रिक भावना रुक नहीं रही है। गत वर्षों में मलावी और सेनेगल, और सोमालिया में नए राष्ट्रपति के रूप में मैंने शांतिपूर्ण बदलाव देखे हैं। बर्मा में राष्ट्रपति ने राजनीतिक बंदियों को मुक्त कर दिया और बंद समाज को स्वतंत्र किया,

साहसी विरोधी संसद के लिए चुने गए, और लोग भविष्य में सुधारों की प्रतीक्षा कर रहे हैं। पूरी दुनिया में लोग अपनी आवाज उठा रहे हैं, अपनी स्वाभाविक गरिमा पर जोर दे रहे हैं, और भविष्य सुनिश्चित करने के अधिकारों की मांग कर रहे हैं।

हाल के सप्ताहों की खलबली हमें याद दिलाती है कि लोकतंत्र का रास्ता मतदान करने पर समाप्त नहीं हो जाता। नेल्सन मंडेला ने एक समय कहा थाः ''स्वतंत्र होने का अर्थ केवल जंजीरों से मुक्त होना नहीं है, बल्कि सम्मान और अन्य लोगों को स्वतंत्रता हेतु प्रोत्साहित करने के साथ जीना है।'' (तालियां)

सच्चे लोकतंत्र की मांग है कि नागरिकों को उनके विचारों के कारण जेल में नहीं ठूंसा जा सकता, और बिना रिश्वत दिए भी कोई व्यापार शुरू किया जा सकता। यह नागरिकों की अपने विचार व्यक्त करने की स्वतंत्रता, निर्भय होकर एकत्रित होने की स्वतंत्रता तथा सभी लोगों के अधिकारों की गारंटी देने वाली कानून व्यवस्था पर निर्भर करता है।

दूसरे शब्दों में सच्चा लोकतंत्र -- वास्तविक स्वतंत्रता -- कठिन कार्य है। जो सत्ता में हैं उन्हें विरोधियों पर कार्रवाई करने से बचना होगा। कठिन आर्थिक समय में, सुधार का श्रमसाध्य कार्य करने के बजाय देश अंदर और बाहर के कथित दुश्मनों को घेरने का कार्य कर सकते हैं।

इसके अलावा ऐसे लोग हमेशा रहेंगे जो मानवीय विकास को नकारते हैं -- तानाशाह जो सत्ता से चिपके हैं, भ्रष्टाचारी के हित यथास्थिति बनाए रखने पर निर्भर हैं, और कट्टरपंथी जो नफरत और अलगाव की आग फैलाते हैं। उत्तरी आयरलैंड से लेकर दक्षिण एशिया तक, अफ्रीका से लेकर अमेरिका तक, बाल्कन्स से लेकर पैसेफिक रिम तक उथल-पुथल देखी है, जो बदलाव करके एक नई राजनीतिक प्रणाली ला सकती है।

उस समय नस्लीय या जनजातीय झगड़ों के आधार पर संघर्ष पैदा हुए हैं। प्रायः परंपरा व आधुनिक युग की विविधता और एक दूसरे पर निर्भर रहने के साथ रीति-रिवाज और धर्म को समझने में होने वाली मुश्किलों के कारण यह संघर्ष पैदा होते हैं। प्रत्येक देश में ऐसे लोग मौजूद हैं जिन्हें विभिन्न धार्मिक आस्थाओं से खतरा महसूस होता है, हर संस्कृति में उन लोगों को जो अपने लिए स्वतंत्रता पसंद करते हैं उन्हें आवश्यक रूप से स्वयं से यह सवाल करना होगा कि वे दूसरों को कितनी आजादी देना बर्दाश्त कर सकते हैं।

गत दो सप्ताह हमने इसके व्यावहारिक नमूने देखे जब एक घटिया और घिनौने वीडियो के कारण तमाम मुस्लिम जगत में शोक और क्रोध की भावनाएं भड़क उठीं। मैं स्पष्ट कर चुका है कि अमेरिकी सरकार का इस वीडियो फिल्म से कुछ संबंध नहीं है, और मैं समझता हूं ऐसे सभी लोगों को इस फिल्म के संदेश को रद्द कर देना चाहिए जो हमारी संयुक्त मानवता का सम्मान करते हैं।

यह केवल मुसलमानों का ही अपमान नहीं है, बल्कि अमेरिका का भी अपमान है। क्योंकि जैसा कि इन दीवारों के बाहर उपस्थित शहर से स्पष्ट है कि हम एक ऐसा देश हैं जिसने हर जाति और आस्था के लोगों का स्वागत किया है। अमेरिका उन मुसलमानों का भी वतन है जो पूरे देश में अपनी आस्था के अनुसार इबादत करते हैं। हम न केवल धर्म की स्वतंत्रता का ही सम्मान करते हैं, बल्कि हमारे यहां ऐसे कानून मौजूद हैं जो लोगों की उनकी वेषभूषा या उनके धर्म की वजह से पहुंचाए जा सकने वाले नुकसान से रक्षा करते हैं। हम समझते हैं कि लोगों की भावनाएं इस वीडियो की वजह से क्यों आहत हो सकती हैं क्योंकि ऐसे लोगों में हमारे दसियों लाख नागरिक भी शामिल हैं।

मैं जानता हूं ऐसे लोग भी हैं जो पूछते हैं कि हम ऐसे वीडियो को प्रतिबंधित क्यों नहीं करते हैं। इसका उत्तर हमारे संविधान में हैः हमारा संविधान मुक्त भाषण के अधिकार की रक्षा करता है।

अमेरिका में, भावनाओं को उत्तेजित करने वाले असंख्य प्रकाशन मौजूद हैं। मेरी तरह बहुसंख्य अमेरिकी ईसाई हैं फिर भी हम अपनी सर्वाधिक पवित्र आस्थाओं के विरुद्ध ईश-निंदा को प्रतिबंधित नहीं करते। अपने देश के राष्ट्रपति और सेना के कमांडर-इन-चीफ के रूप में मैं स्वीकार करता हूं कि लोग मुझे प्रतिदिन बुरा भला कहेंगे -- (हंसी) और मैं हमेशा उनके इस अधिकार की रक्षा करता रहूंगा। (तालियां)

अमेरिकी पूरी दुनिया में तमाम लोगों की अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के अधिकार की रक्षा के लिए लड़े और मरे हैं। चाहे उस विचार से हम पूरी तरह से असहमत हों। हम ऐसा करते हैं इसकी वजह यह नहीं है कि नफरत भरी बातचीत का समर्थन करते हैं बल्कि इसका कारण यह है कि हमारे संस्थापक यह समझते थे कि इस अधिकार की रक्षा के बिना हर व्यक्ति की अपने विचार व्यक्त करने और उसके धर्म पर चलने की क्षमता खतरे में पड़ सकती है। हम ऐसा इसलिए करते हैं क्योंकि विविधतापूर्ण समाज में भाषण पर प्रतिबंध लगाना जल्दी ही आलोचकों को चुप कराने और अल्पसंख्यकों को दबाने का उपकरण बन सकता है।

हम ऐसा इसलिए करते हैं क्योंकि हमारे जीवन में आस्था की शक्ति, और धार्मिक मतभेदों से भड़क उठने वाली भावनाओं के जोश के कारण, नफरतपूर्ण बातचीत के विरुद्ध सबसे शक्तिशाली हथियार उसका दमन करना नहीं बल्कि और भी बातचीत करना है। ऐसी सहिष्णुतापूर्ण आवाजें जो कट्टरता और ईश निंदा के विरुद्ध उठ खड़ी हों, और समझदारी और आपसी सम्मान करने के मूल्यों को ऊपर उठाती है।

हां, मैं जनता हूं कि इस मंच के सभी देश बातचीत की स्वतंत्रता की रक्षा के विचार से सहमत नहीं हैं। हम इस बात को समझते हैं। लेकिन 2012 में ऐसे समय में जब कोई भी अपने सेल फोन के द्वारा एक बटन का इस्तेमाल करके पूरी दुनिया में अपने उत्तेजक विचार फैला सकता है, और जिसे हम रोक नहीं सकते हैं। प्रश्न यह है कि तब हम कैसे इसका समाधान करें?

हमें इस बात पर सहमत होना चाहिएः कोई भी भाषण मूर्खतापूर्ण हिंसा को सही नहीं ठहरा सकता। (तालियां) कोई भी शब्द ऐसे नहीं है जिनकी आड़ लेकर निर्दोषों की हत्या कर दी जाए। कोई भी वीडियो दूतावास पर हमले को सही नहीं ठहरा सकता। कोई भी अपमान ऐसा नहीं है जो लोगों को लेबनान में रेस्टोरेंट जलाने या ट्यूनिस में स्कूल को बर्बाद कर देने या पाकिस्तान में मौत और विनाश करने का बहाना हो।

इस आधुनिक दुनिया में आधुनिक प्रौद्योगिकियों के साथ अगर हम दुनिया में गड़बड़ी फैलाने वाले नफरतपूर्ण भाषण देने वाले किसी व्यक्ति का उसी तरह उत्तर दें तो वह और सशक्त हो जाएगा। वह सबसे खराब स्थिति होगी।

और व्यापक तौर पर पिछले दो सप्ताहों की घटनाएं हमें बताती हैं कि हम सभी को पश्चिम और लोकतंत्र की ओर अग्रसर अरब दुनिया के बीच तनाव पर ईमानदारी से ध्यान देने की जरूरत है।

हां, हम स्पष्ट करना चाहते हैं: जिस तरह हम दुनिया में हर समस्या का समाधान नहीं कर सकते। अमेरिका ने विदेशों में लोकतांत्रिक परिणामों को न तो निर्देशित किया है न ही करना चाहेगा। हम अन्य राष्ट्रों से यह अपेक्षा नहीं करते हैं कि वे हर मुद्दे पर हमसे सहमत हों, न ही हम यह मानकर चलते हैं कि गत सप्ताहों की हिंसा या कुछ व्यक्तियों का घृणापूर्ण भाषण बहुसंख्य मुसलमानों के विचारों की प्रतीक है। न ही वीडियो बनाने वाले लोगों के विचार अमेरिकियों के विचार हैं। हालांकि, मैं मानता हूं कि सभी देशों में सभी नेताओं के लिए जरूरी है कि हिंसा और अतिवाद का विरोध अपनी पूरी ताकत से करें। (तालियां)

यह समय उन लोगों को महत्वहीन कर देने का है जो प्रत्यक्ष रूप हिंसा का सहारा नहीं लेते लेकिन अमेरिका, या पश्चिम, या इस्राइल के प्रति नफरत को अपनी राजनीति का मुख्य सिद्धांत बनाते हैं। यह नफरत उनको संरक्षण देती है और कभी-कभी उन लोगों के लिए बहाना बनती है, जो हिंसा का सहारा लेते हैं।

राजनीति का यह प्रकार -- जो पूर्व को पश्चिम के खिलाफ, दक्षिण को उत्तर के खिलाफ, मुसलमानों को ईसाइयों और हिंदू व यहूदियों के खिलाफ लड़ाता है -- यह स्वतंत्रता का अधिकार नहीं दे सकता। युवाओं को यह केवल झूठी आशा देता है। अमेरिकी झंडे को जलाना एक बच्चे को शिक्षित करने के लिए कुछ नहीं करता। एक रेस्टोरेंट को नष्ट कर देना भूखे का पेट नहीं भर सकता। एक दूतावास पर हमला एक भी रोजगार नहीं दे सकेगा। इस प्रकार की राजनीति, जो कुछ हमें मिलकर करना चाहिए उसे कठिनतम बना देती हैः जैसे बच्चों को शिक्षा देना, रोजगार पैदा करना जिनके वे अधिकारी हैं; मानवाधिकारों की रक्षा, और लोकतंत्र के अधिकार को बढ़ाना।

याद रखें कि अमेरिका दुनिया के प्रति अपनी जिम्मेदारियों से पीछे नहीं हटेगा। जिन लोगों ने हमारे नागरिकों और हमारे दोस्तों को नुकसान पहुंचाया है उन्हें न्याय के कटघरे में लाएंगे। हम अपने साथियों के साथ खड़े रहेंगे। हम व्यापार और निवेश, विज्ञान व प्रौद्योगिकी, ऊर्जा और विकास के संबंध बनाने के लिए दुनिया भर के देशों के साथ भागीदारी करने के इच्छुक है। यह सभी कोशिशें हमारे सभी लोगों के लिए और लोकतांत्रिक परिवर्तन को स्थिर करने हेतु आर्थिक विकास के रास्ते खोलेंगी।

लेकिन ऐसे प्रयास आपसी हितों तथा आपसी सम्मान की भावना पर निर्भर हैं। कोई सरकार या कंपनी, कोई स्कूल या एनजीओ ऐसे देश में कार्य करने के प्रति आश्वस्त नहीं है जहां उसके लोग खतरे में हों। भागीदारी में प्रभावी होने के लिए नागरिकों की सुरक्षा आवश्यक है तथा हमारे प्रयासों का स्वागत होना चाहिए।

क्रोध पर आधारित राजनीति -- ''हम'' और ''उन'' के बीच विभाजित दुनिया पर आधारित राजनीति न केवल अंतर्राष्ट्रीय सहयोग में बाधा पहुंचाती है बल्कि अंततः इसे सहन करने वालों को दुर्बल कर देती है। हम सभी का हित इन ताकतों के विरुद्ध खड़े होने में है।

आइए याद करें कि मुसलमानों ने उग्रवाद के हाथों सबसे अधिक पीड़ा सहन की है। इसी तरह बेनगाज़ी में हमारे नागरिक मारे गए, टर्की के पुलिस अधिकारी की उसके विवाह के कुछ दिन पूर्व इस्तांबुल में हत्या कर दी गई; सना में 10 से अधिक यमन नागरिक एक कार बम धमाके में मारे गए। काबुल में एक आत्मघाती हमलावर के द्वारा कई अफगानी बच्चों की हत्या का उनके माता-पिता ने शोक मनाया।

असहिष्णुता और हिंसा की उत्तेजना शुरु में पश्चिम पर केंद्रित हो सकती है, लेकिन आगे चलकर यह सीमित नहीं रह सकती। यही अतिवाद की उत्तेजना सुन्नी व शिया, जनजाति और वंशों के बीच लड़ाई को सही ठहराने के लिए प्रयोग की जाती है। यह मजबूती और समृद्धि की ओर नहीं बल्कि अराजकता की ओर ले जाती है। दो साल से भी कम समय में हमने देखा है कि दशकों की हिंसा के मुकाबले व्यापक रूप से शांतिपूर्ण विरोध से मुस्लिम बहुल देशों में अधिक बदलाव हुए हैं। और उग्रवादी इसे भली भांति समझते हैं। क्योंकि उनके पास लोगों का जीवन सुधारने के लिए कुछ नहीं है। उनके प्रासंगिक रहने का हिंसा ही एक तरीका है। वे निर्माण नहीं करते, वे केवल विनाश करते हैं।

समय है कि हम हिंसा की बोली और विभाजन के पीछे की राजनीति छोड़ दें। बहुत से मुद्दों पर हमें भविष्य की आशा या अतीत के कारागार के बीच चुनाव करना होता है। और हम गलत रास्ते पर चलने का जोखिम नहीं उठा सकते। हमें इस क्षण का उपयोग करना होगा। अमेरिका उन सभी के साथ कार्य करने का इच्छुक है, जो बेहतर भविष्य का आलिंगन करना चाहते हैं।

मिस्र में जो लोग कॉप्टिक क्रिश्चियन को निशाना बना रहे हैं निश्चित रूप से उनका कोई भविष्य नहीं है-- इस पर उनका हक है जो तहरीर स्क्वेयर में कहते हैं, ''मुस्लिम्स, क्रिश्चियन्स एक हैं।'' भविष्य उनका नहीं है जो महिलाओं को धमकाते हैं -- यह दुनिया में स्कूल जाने वाली लड़कियों द्वारा गढ़ा जाना चाहिए, जहां हमारी लड़कियां लड़कों की तरह सपने साकार करती हैं। (तालियां)

भविष्य उन भ्रष्ट लोगों का नहीं होगा जो देश के संसाधनों की चोरी करते हैं -- यह विद्यार्थियों और उद्यमियों, कर्मचारियों और व्यापार मालिकों द्वारा जीता जाना चाहिए जो लोगों के लिए व्यापक समृद्धि चाहते हैं। ऐसी महिलाओं और पुरुषों के साथ अमेरिका है, उनके दृष्टिकोण का हम समर्थन करते हैं।

ऐसे लोगों की कोई जगह नहीं होनी चाहिए जो इस्लाम के पैगंबर का अपमान करते हैं, लेकिन ज्यादा विश्वसनीय होने के लिए जो लोग इस अपमान की निंदा करते हैं उन्हें उस घृणा की भी निंदा करनी चाहिए जो ईसा मसीह की तस्वीर के अपमान पर हमें नजर आती है, उन गिरजाघरों पर जो विध्वंस कर दिए जाते हैं या हॉलोकॉस्ट की घटना का इनकार करते हैं।

आइए सूफी मुसलमानों और शिया तीर्थयात्रियों के विरुद्ध उत्तेजना की भी निंदा करें। यह वक्त गांधी जी के उन शब्दों पर ध्यान देने का है कि ''असहिष्णुता अपने आप में हिंसा का एक प्रकार है और एक सच्ची लोकतांत्रिक भावना के प्रचार-प्रसार में रुकावट है। हमें मिलकर एक ऐसी दुनिया बनाने के लिए कार्य करना है जहां हमारी विषमताएं हमें मजबूत बनाने का कारण बनें, न कि हमारी पहचान बन जाएं। यही अमेरिकी दृष्टिकोण है और यही वह अवधारणा है जिसका हम समर्थन करेंगे।''

इजराइलियों और फलस्तीनियों में, भविष्य उनका नहीं होना चाहिए जिन्होंने शांति की संभावना से मुंह मोड़ लिया है। आइए उनको पीछे छोड़ दें जो संघर्ष पर पले हैं, जो इजराइली अस्तित्व के अधिकार को निरस्त करते हैं। मार्ग कठिन है, लेकिन मंजिल साफ है -- एक सुरक्षित, यहूदी देश इजराइल और एक स्वतंत्र व समृद्ध फलस्तीन। (तालियां) ऐसी शांति दो पक्षों के बीच केवल समझौते के माध्यम से होनी चाहिए। जो इस यात्रा के लिए तैयार हैं अमेरिका उन सभी के साथ-साथ चलेगा।

सीरिया में भविष्य तानाशाह का नहीं होना चाहिए जो अपने लोगों का नरसंहार करता है। आज दुनिया में अगर विरोध, शांतिपूर्ण विरोध का कोई कारण हो सकता है तो वह विरोध उस शासन के विरुद्ध होना चाहिए जो बच्चों पर जुल्म कर रहा है और आवासीय मकानों पर रॉकेट दाग रहा है। हमें इस बात को सुनिश्चित करने के लिए निरंतर कार्य करते रहना चाहिए कि अपने अधिकार मांगने वाले नागरिकों के साथ शुरू में जो कुछ हुआ उसे नस्ली हिंसा के चक्र के रूप में परिवर्तित नहीं होना चाहिए।

हमें मिलकर उन सीरियाईयों के साथ रहना होगा जो अलग दृष्टिकोण में विश्वास करते हैं -- सीरिया जो संगठित और संयुक्त है, जहां बच्चों को अपनी सरकार से डरने की जरूरत नहीं है, और सभी सीरियाई -- सुन्नी और अलावी, कुर्द और ईसाई -- कह सकें वे कैसा शासन चाहते हैं -- । अमेरिका उनके साथ है। हम जो काम करेंगे उसका नतीजा यही निकलेगा, हम सताने वाले लोगों के विरुद्ध प्रतिबंध लगाएंगे और जो लोग अच्छे काम करेंगे उनका समर्थन और मदद करेंगे। हमें विश्वास है कि सीरिया के लोग जो इस दृष्टिकोण को अपनाते हैं वह शक्ति और जायज ढंग से देश का नेतृत्व करेंगे।

हम देखते हैं ईरान हिंसा के रास्ते पर और गैर-जिम्मेदाराना विचारधारा पर चल रहा है। ईरानी लोगों का शानदार और प्राचीन इतिहास है और बहुत से ईरानी अपने पड़ोसियों के साथ समृद्धि और शांति से रहने के इच्छुक हैं। लेकिन लोगों के अधिकार प्रतिबंधित है। ईरानी सरकार दमिश्क में एक तानाशाह को सहायता जारी रखे हुए है और विदेशों में आतंकी समूहों को सहयोग करती है। कई बार अपने परमाणु कार्यक्रम को शांतिपूर्ण साबित करने और संयुक्त राष्ट्र की शर्तें पूरी करने में असफल रही है।

इसलिए स्पष्ट करना चाहता हूं कि अमेरिका इस मुद्दे को कूटनीति से सुलझाना चाहता है, और हम मानते हैं कि अभी भी ऐसा करने की गुंजाइश है। लेकिन वह समय असीमित नहीं है। हम राष्ट्रों के शांतिपूर्ण परमाणु शक्ति हासिल करने के अधिकार का सम्मान करते हैं, लेकिन संयुक्त राष्ट्र के उद्देश्यों में एक यह भी देखना है कि हम शक्ति का उपयोग शांति के लिए कर रहे हैं। और यह कहना गलत नहीं होगा कि एक परमाणु संपन्न ईरान ऐसी चुनौती नहीं है जिसे सीमित

किया जा सकता है। यह इजरायल के अस्तित्व, खाड़ी देशों की सुरक्षा, और विश्व अर्थव्यवस्था के स्थायित्व के लिए खतरा हो सकता है। इससे इस क्षेत्र में परमाणु हथियारों दौड़ शुरू होने और अप्रसार संधि के असफल होने का खतरा है। इसीलिए गठबंधन देश ईरानी सरकार को जवाबदेह बना रहे हैं। और इसीलिए परमाणु हथियारों को हासिल करने से ईरान को रोकने के लिए अमेरिका वह करेगा जो उसे करना चाहिए।

हमें दर्दनाक अनुभवों के द्वारा ज्ञात हुआ है कि सुरक्षा और समृद्धि का रास्ता अंतर्राष्ट्रीय कानून और मानवाधिकारों के सम्मान की सीमाओं के अंतर्गत ही है। इसीलिए इस मंच की स्थापना संघर्ष के अवशेषों से हुई थी। इसीलिए शीतयुद्ध में अत्याचारों पर उदारता की विजय हुई। और पिछले दो दशकों से यही सीख मिली है।

इतिहास बताता है कि शांति और उन्नति उनकी होती है जो सही चुनाव करते हैं। दुनिया के हर हिस्से में राष्ट्र इसी कठिन रास्ते पर चले हैं। 20वीं शताब्दी का सबसे रक्तरंजित रणभूमि यूरोप, आज संगठित, स्वतंत्र और शांतिपूर्ण है। ब्राज़ील से लेकर दक्षिण अफ्रीका तक, टर्की से लेकर दक्षिणी कोरिया तक, भारत से लेकर इंडोनेशिया तक, विभिन्न जातियों, धर्मों, और परंपराओं के लोग गरीबी से बाहर आए हैं और इन राष्ट्रों ने अपने नागरिकों के अधिकारों का सम्मान किया है तथा राष्ट्र के रूप में अपनी जिम्मेदारियों को पूरा किया है।

यह सब उन्नति से संभव हुआ है जिसका मैं अपने जीवन में साक्षी हूं। उन्नति, जिसका मैं राष्ट्रपति बनने के बाद चार सालों से साक्षी हूं, जिस दुनिया में हम रहते हैं उसके बारे में मैं कभी भी इतना आशावान नहीं था। ईराक की लड़ाई समाप्त चुकी है। अमेरिकी सैनिक वापस आ गए हैं। हमने अफगानिस्तान में बदलाव की शुरुआत की है। और अमेरिका और हमारे साथी 2014 में अपनी लड़ाई समाप्त कर देंगे। अल कायदा कमजोर हो गया है। और ओसामा बिन लादेन अब नहीं है। परमाणु सामग्री पर ताला लगाने के लिए कई राष्ट्र साथ आ गए हैं और अमेरिका और रूस अपने शस्त्रागारों को घटा रहे हैं। हमने देखा है कि नायपिडॉ से लेकर काहिरा और आबिदजन तक ने नागरिकों के हाथों में अधिक शक्ति देने के लिए कठिन फैसले किए हैं।

आर्थिक चुनौतियों के समय में दुनिया भर के देश समृद्धि को व्यापक बनाने के लिए साथ आए हैं। दुनिया को फिर से रास्ते पर लाने के लिए जी 20 के माध्यम से हमने उभरते देशों के साथ भागीदारी की है। अमेरिका ने वृद्धि को बढ़ावा देने और निर्भरता समाप्त करने वाला एक विकास एजेंडा अपनाया है, और अफ्रीकी नेताओं के साथ मिलकर उनके देश में भुखमरी की समस्या का समाधान करने में मदद की है। नई भागीदारी भ्रष्टाचार से लड़ने और सरकार की तरक्की करने के लिए बनाई गई है जो खुली और पारदर्शी है। महिलाओं और लड़कियों का पूरी तरह से राजनीति में भाग लेना और अवसर खोजना सुनिश्चित करने के लिए ईक्वल फ्यूचर पार्टनरशिप के माध्यम से नए संकल्प लिए गए हैं। आज किसी समय मैं मानव तस्करी के अभिशाप से लड़ने के हमारे प्रयासों पर चर्चा करूंगा।

यह सभी चीजें मुझे आशावान बनाती हैं। लेकिन सबसे ज्यादा आशावान बनाती है और जिससे उम्मीद है वह हमारे या हमारे नेताओं के कार्य नहीं हैं, बल्कि यह लोगों के कार्य हैं जो मैंने देखे हैं। अमेरिकी सेनाएं जिनका जीवन खतरे में है और आधी दुनिया में अजनबियों के लिए अपनी जानों को खतरे में डाला तथा अंगों का बलिदान किया है; जकार्ता और सिओल में छात्र अपने ज्ञान को मानवता के हित में लगाने के लिए उत्सुक हैं; पेरू या घाना की संसद में जिन्होंने देखा है लोकतंत्र उनकी भावनाओं को आवाज दे रहा है; रियो के फेवलास में युवा और मुंबई के स्कूल जिनकी आंखें उम्मीद से चमकने लगी हैं। यह हर नस्ल और आस्था के आदमी और महिलाएं और बच्चे मुझे याद दिलाते हैं कि हर नाराज भीड़ जो टेलीविजन पर दिखाई गई, दुनिया भर में करोड़ों लोगों की आशाएं और सपने समान हैं। वे हमें बताते हैं कि मानवता के लिए हृदय की धड़कन समान है।

हमारी दुनिया में ऐसी चीजों पर अधिक ध्यान दिया जाता है जो हमें विभाजित करती हैं। यही हम समाचारों में देखते हैं। यही हमारी राजनीतिक बहस है। लेकिन जब आप इन चीजों से अपना ध्यान हटा देते हैं तो लोग सर्वत्र अपनी मंजिल सुनिश्चित करने की स्वतंत्रता चाहते हैं;

और उन्हें अपने काम से सम्मान मिलता है; अपने धर्म से आराम मिलता है; और उन सरकारों से इंसाफ मिलता है जो लोगों की सेवा करती हैं। इसके अतिरिक्त कोई दूसरा रास्ता नहीं।

संयुक्त राज्य अमेरिका हमेशा इन आकांक्षाओं के साथ खड़ा रहेगा, अपने लोगों के लिए और पूरी दुनिया के लोगों के लिए भी। यही हमारी स्थापना का उद्देश्य था। यही हमारा इतिहास हमें बताता है। यही क्रिस स्टीवेंस अपने पूरे जीवन करते रहे।

मैं आपसे यह वादा करता हूं: चाहे कितने ही लंबे समय के बाद हत्यारे न्याय के कटघरे में लाए जाएंगे, क्रिस स्टीवन की विरासत उन हजारों लोगों के जीवन में जीवित रहेगी जिन्होंने बेनगाज़ी की सड़कों पर हिंसा के विरुद्ध मार्च किया और लीबियाई लोगों में जिन्होंने फेसबुक पर अपने फोटो की जगह क्रिस की फोटो लगाई और उन हस्ताक्षरों में सादा शब्दों में लिखा कि क्रिस स्टीवेंस सभी लीबियाई नागरिकों के मित्र थे।''

उन्हें हमें आशा देनी चाहिए। उन्हें हमको याद दिलाना चाहिए कि इतने लंबे समय तक इसके लिए हमने कार्य किया, न्याय किया जाएगा, इतिहास हमारे साथ है, और यह स्वतंत्रता का बढ़ता ज्वार कभी वापस नहीं होगा।

अनेक धन्यवाद। (तालियां)